Dr. Madan Paswan, History,
Date: 20.08.2020

Class:- B.A. Part-I (Hons.) Paper-1st
Lecture No. 24

Topic: भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ - मध्य-पूर्व पाषाण काल.

उल्लेखनीय है कि मध्य पुरा पाषाण कालीन स्थल अफगानिस्तान, ईरान, ईराक और पाकिस्तान में भी मिले हैं। इनमें से अधिकांश उपकरण प्रारूपों की दृष्टि से पश्चिमी यूरोप की मौस्तरी संस्कृति से खूब मिलते-जुलते हैं। हो सकता है भारत के पश्चिमी क्षेत्र का इन विदेशी संस्कृतियों से कुछ संपर्क रहा हो।

उत्तर-पुरापाषाण काल :

पुरा पाषाण युग की तीसरी अवस्था में जलवायु में नमी पहली से कम हो गई थी। इस काल के अनेक नये और छोटे उपकरणों से पता चलता है कि मनुष्य की आवश्यकताएँ बदल रही थीं। इनसे यह भी प्रमाणित होता है कि उपकरण बनाने की विधि का काफी विकास हो गया था। इस काल का प्रधान उपकरण ब्लेड था। ब्लेड पतले तथा संकरे आकार वाला वह पाषाण फलक था जिसके दोनों किनारे समानान्तर होते थे तथा जो लम्बाई में अपनी चौड़ाई से दूना होता था। यह उपकरण लकड़ी या हड्डी में फंसाकर काम में लाया जाता था। इस तरह से इस काल में उपकरण बनाने की मुख्य सामग्री लंबे और स्थूल प्रस्तर फलक होते थे। इस संस्कृति में अस्थि उपकरणों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी। जो प्रारूप पहचान में आये हैं उनमें कुछ अलंकृत पट्टे, मत्स्य भाले, नोकदार सुइयाँ और भालों की नोकें शामिल हैं। इस संस्कृति में नक्काशी और चित्रकारी दोनों रूपों में कला व्यापक रूप से देखने को मिलती है।

प्राप्त स्थल — बेलन तथा सोन घाटी (उत्तर प्रदेश),
सिंहभूम (झारखण्ड),
जोगदहा, भीम बेटका, बबुरी, रामपुर, बाघोर (मध्य
पटणे, भदणे तथा इनामगाँव (महाराष्ट्र),
रेनुगुन्टा, वेमुला, कर्नूल गुफाएँ (आंध्र प्रदेश),
शोरापुर दोआब (कर्नाटक),
विसदी (गुजरात) तथा
पुष्कर (राजस्थान)।

उत्तर-पूर्व पाषाण काल की अवधि ई० पू० 30,000 - 10,000 के मध्य निर्धारित की गई है। इलाहाबाद की बेलन घाटी में स्थित लोहदा नाले से मिली हुई अस्थि निर्मित मातृदेवी की मूर्ति इसी काल की है। ब्लेड के निर्माण में चर्ट, जेस्पर, फ्लिन्ट आदि बहुमूल्य पत्थरों का उपयोग किया गया है।

Continue

पुरा पाषाण कालीन जीवन :

पुरा पाषाण कालीन मानव का जीवन अत्यन्त बर्बर था। वह पूर्णतया प्रकृतिजीवी था। कृषि कर्म से अपरिचित होने के कारण वह सहज रूप से उत्पन्न होने वाले फल-फूल और कन्द-मूल, आखेट में मारे गये पशुओं तथा नदियों और झीलों के तटों पर पकड़ी गई मछलियों से ही अपना पेट भरता था। अनेक स्थानों पर मनुष्य की पाषाण सामग्री और पशुओं के अस्थि-पंजर साथ-साथ मिले हैं। अधिकांश इतिहासकारों का मत है कि पूर्व-पाषाण युग में अग्नि का आविष्कार नहीं हुआ था, इसलिए तत्कालीन मनुष्य कच्चा मांसादि भक्षण करता था।

पूर्व पाषाण कालीन मानव का एक प्रमुख उद्यम आखेट था। हिंसक पशुओं की हत्या से मानव जीवन अधिक सुरक्षित हो गया। मारे गये पशुओं के रूप में मनुष्य को एक अतिरिक्त खाद्य मिला होगा। इससे उसकी जीवन यात्रा और अधिक सुगम हो गई। मृत पशुओं के चमड़ों से वस्त्र और अस्थि से हथियार-औजार बन सकते थे। पुनः परोक्ष रूप से हथियार-औजार के कारण आखेट शारीरिक प्रौढ़ता और मनोविनोद के लिए भी उपयोगी सिद्ध हुआ होगा।

सर्वप्रथम उसने वृक्षों की शाखाओं और लट्ठों का ही प्रयोग किया होगा। इनसे छोटे-छोटे निर्बल पशुओं का ही आखेट संभव था, अतएव भयंकर पशुओं के आखेट के लिए मनुष्य को अन्य किसी सुदृढ़ और पैने साधन की आवश्यकता प्रतीत हुई। आदि मानव के लिए सबसे अधिक उपयोगी पाषाण ही जान पड़ा। आलुध का आविष्कार पूर्व पाषाण काल की एक क्रांतिकारी घटना है। प्रयुक्त पाषाणों में क्वार्टजाइट, सैण्डस्टोन, लेटेराइट और जैस्पिस उल्लेखनीय हैं।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि अति बर्बर अवस्था में होने के कारण पुरापाषाण कालीन मानव में किसी प्रकार की धार्मिक अथवा लोकोत्तर भावना का उदय नहीं हुआ था। उत्खनन में कोई भी ऐसी सामग्री उपलब्ध नहीं हुई है, जिससे उसके देवी-देवता अथवा उपासना विधि का अनुमान हो सके। वह शवों को पृथ्वी पर इधर-उधर फेंक देता था, जहाँ उन्हें पशु-पक्षी खा जाते थे अथवा कालान्तर में वे स्वयं मिट्टी में मिल जाते थे। उत्खनन में न तो मृतकों की समाधियाँ मिली हैं और न उनके दाह के अवशेष ही।

Continue.....

—Dr. Madan Paswan, History.

Date: 20.08.2020